आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:22-08-14

हमें इस विकारी कलयुगी दुनिया से मुक्त कर, अपने साथ मुक्तिधाम ले जानेवाले मीठे-मीठे बाबा ने कहा, मीठे बच्चे - अब वापस घर जाना है इसलिए बाप को याद करने और चरित्र को सुधारने की मेहनत करो.

बाबा ने आज फिरसे हम बच्चों को हमारे स्वीट होम (मुक्तिधाम) कि बार-बार याद दिलाते हुए कहा, अब मैं तुमको वापस अपने घर ले चलने के लिए आया हूँ. लेकिन बाबा के साथ घर चलने के लिए संपूर्ण पवित्र भी जरूर बनना पड़े और संपूर्ण बनने कि एक ही युक्ति है स्वयं को आत्मा समझ बाप को याद करो.

आज हम सब यह मुरली पॉइन्ट्स पढ़ते समय, स्वयं को आत्मा समझ बाप से डायरेक्ट पढ़ रहे है यह स्थिति बनाकर पढ़ेंगे तो बाबा कि याद और पढ़ाई दोनों में हम आगे बढ़ेंगे.

- मीठे-मीठे बच्चों को अब बाप ने घर (मुक्तिधाम) याद दिलाया है. भल भक्ति में भी घर को याद करते थे लेकिन वहॉ कब और कैसे जाना है, वह कुछ भी नहीं जानते थे.

- शास्त्रों में कल्प कि आयु लाखों वर्ष कह देने से, समझते थे घर जाने में बहुत टाइम बाकी रहा है तो घर भूल जाता था. अभी बाप कहते हैं - बच्चे, घर तो बहुत नजदीक है, अब चलेंगे अपने घर! मैं तो तुम बच्चों के बुलाने पर आया हूँ. चलेंगे?

- भक्ति में तो यह मालूम नहीं था कि मुक्तिधाम को ही हमारा घर कहा जाता है. न बाप को, न घर को जानते थे. जैसे कि अज्ञान नींद में सोये हुए थे. भक्ति में समझते थे मुक्तिधाम में जाने में बहुत टाइम पड़ा है. अब बाप ने आकर तुम्हें जगाया है. बाप कहते हैं मुक्तिधाम में तो अभी जाना है.

- अब बाप कहते हैं - बच्चे, घर तो बिल्कुल नजदीक है, अब में आया हूँ तुमको घर ले चलने. घर चलना है लेकिन पवित्र बनकर.

- अब बाप कहते है भक्ति अब पूरी होती है. भक्ति में तो अपरंपार दुख रहता है. ऐसे नहीं कि सारा आधाकल्प दुख होता है. ज्यादा दुख तो तुमने कलयुग के अन्त में भोगा है जबकि तुम

जास्ती विकारों में गंदे बने हो. अब बाप, बच्चों को कहते है सुखधाम चलना है तो पावन बनो. जन्म-जन्मांतर के जो पाप सिर पर है, उन्हें याद से उतारो.

- बाप कहते है तुमको ऐसा (लक्ष्मी-नारायण जैसा) बनना है तो पवित्र बनो और चरित्र सुधारो.

- बाप कहते है जब तक मैं हूँ तब तक तुम पुरुषार्थ करते रहो. बाप कितना वर्ष रहेंगे? बाप इतने वर्षों से बैठ समझाते हैं, अच्छा ही टाइम देते हैं. सृष्टि चक्र को जानना तो बहुत सहज है. बाकी जन्म-जन्मांतर के पाप कटने में देरी लगती है. इसके लिए ही बाबा टाइम देते है.

- यहॉ बैठते हैं तो सारा समय याद में थोड़े ही बैठते हैं, बहुत तरफ बुद्धि चली जाती है, इसलिए टाइम दिया है, मेहनत कर कर्मातित अवस्था को पाना ही हैं.

- बाप समझाते है, तुमको बेहद के बाप से वर्षा लेना है. भगवान तो है निराकार. कृष्ण तो देहधारी है उनको भगवान कह नहीं सकते. देहधारी मनुष्य तो पुनर्जन्म लेते है, उनसे बेहद का वर्षा मिल न सके. तुम आत्माओं को एक परमपिता-परमात्मा से ही वर्षा मिलता है.

- बाप तुम्हें याद दिलाते है, भक्ति में बाप को पाने के लिए तुम कितना भटकते थे. पहले तो एक शिव कि ही पूजा करते थे, और कोई तरफ जाते नहीं थे. अभी तो ढेर चित्र है, मंदिर आदि बनाते है. भक्ति मार्ग में तुमको कितनी मेहनत करनी पड़ती है. मनुष्यों की भक्ति करना तो यह पांच तत्वों कि भक्ति करना है. शरीर तो पांच तत्वों का बना हुआ है. अब बच्चों को मुक्तिधाम में चलना है जिसके लिए इतनी भक्ति करते है. अब में तुमको अपने साथ ले चलता हूँ. वहॉ से तुम सतयुग में चले जायेंगे.

- अब बाप कहते है, भक्ति में तुमने ही मुझ पतित-पावन बाप को बुलाया है, मैं आया हूँ तो तुम पावन बनो ना. अपने को आत्मा समझ मामेकम याद करना है तो सतोप्रधान बन जायेंगे. फिर बाप तुम्हें साथ ले जायेंगे.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com .